चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	10.06.2020	09	03-08

वर्षा ऋतु की मुख्य फसल, 45 दिन में हो जाती है तैयार

भिंडी की खेती से किसान कर सकते हैं आमदनी डबल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

भिंडी की खेती करके किसान अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। वर्षा ऋतु के आरंभ में किसान भिंडी की बुआई कर सकते हैं। भारत भिंडी उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। यह फसल गर्मी व बरसात दोनों मौसम में बोई जा सकती है परंतु यह बरसात के मौसम की मुख्य फसल है व इस मौसम में पैदावार अधिक होती है।

- एक एकड़ में 45 क्विंटल तक होता उत्पादन

भिंडी के बीज के उगने के लिए 25 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त होता है। अच्छी उपज के लिए हल्की अम्लीय दुमट मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है। यह 45 दिन में फसल देना आरंभ कर देती है।

यह 30 से 40 क्विंटल प्रति एकड़ फसल दे देती है।

खाद व उर्वरक

गोबर की गली-सड़ी खाद 10 टन प्रति एकड़ बिजाई से 3 सप्ताह पहले डालें और समान रूप से भूमि में मिला दें। औसत उपजाऊ जमीन में 40 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 24 किलोग्राम फास्फोरस प्रति एकड़ डालें। मिट्टी की जांच के बाद ही पोटाश डालें।

एक तिहाई नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बिजाई से पहले मिट्टी में मिला दें। नाइट्रोजन की शेष मात्रा दो भागों में एक बिजाई से लगभग तीन सप्ताह बाद व दूसरी मात्रा पौधों में फूल आने के समय डालें।

प्रोटीन व विटामिन भरपूर

भिण्डी मे प्रोटीन, काबोहाइड्रेटस, कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नेशियम के अतिरिक्त विटामिन ए, बी, सी तथा रेशा पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इसमे आयोडीन की मात्रा अधिक होती है।

भिंडी की उन्नत किस्में

वर्षा उपहार, हिसार उन्नत, हिसार नवीन, एचबीएच-42

अच्छी आमदनी

भिंडी की खेती करके किसान अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। भारत भिंडी उत्पादन में नंबर वन है। यह 45 क्विंटल प्रति एकड़ तक उत्पादन दे देती है।

-डॉ. सुरेंद्र धनखड़, भिंडी विशेषज्ञ, हकृवि

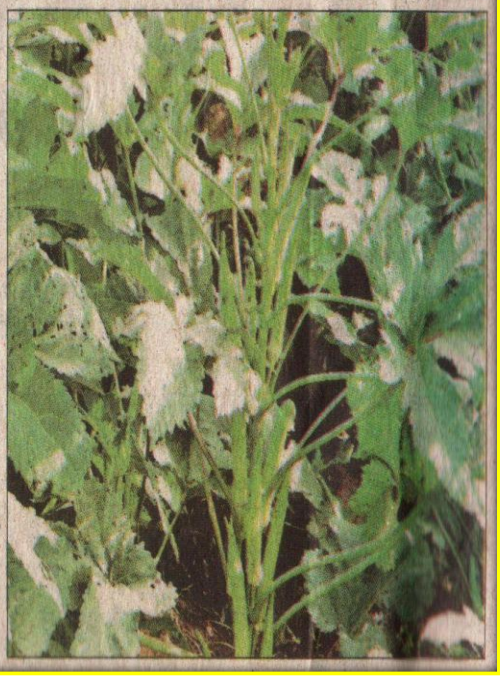

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	10.06.2020	04	06-08

प्रदेश में पीएचडी और मास्टर डिग्री कक्षाएं शुरू कराने को राज्यपाल से मिले दुष्यंत

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़ : विश्वविद्यालयों में अनुसंधान (पीएचडी) कार्यों को पुनः शुरू कराने को लेकर डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने राजभवन में राज्यपाल सत्यदेव नारायण आर्य से मुलाकात की। चौटाला ने बताया कि कोरोना के चलते लॉकडाउन के कारण विश्वविद्यालयों में कृषि और पशुपालन पर हो रहे शोध कार्यों पर विपरीत असर पड़ा है। लॉकडाउन के बाद विश्वविद्यालयों में खासकर स्नातकोत्तर और पीएचडी करने वाले छात्रों को प्रयोगशालाओं में वापस लाना जरूरी है ताकि उनकी रिसर्च व्यर्थ न चली जाए।

राज्यपाल से मुलाकात के बाद पत्रकारों से रूबरू उप मुख्यमंत्री ने बताया कि आज तमाम विवि बंद हैं, इसके चलते सभी रिसर्च कार्य बाधित हो रहे है। इस विषय पर पिछले दिनों छात्र इकाई इनसो की बैठक बुलाकर छात्रों के साथ चर्चा की गई। इस विषय पर उनकी हरियाणा कृषि विवि (एचएयू) के वाइस चांसलर से भी चर्चा हुई है।

राज्यपाल प्रो. सत्यदेव नारायण आर्य से मिलते डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला। ● डीपीआर

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों के कैंपस में विदेशी छात्र मौजूद हैं, लेकिन हमारे प्रदेश के छात्र जो गेहूं, धान और पशुधन पर शोध कर रहे हैं, वे लॉकडाउन की वजह से अपने-अपने घर चले गए। इसकी वजह से शोध कार्यों पर गलत असर पड़ रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार–पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	09.06.2020	--	--

वर्षा ऋतु में भिण्डी की खेती किसानों के लिए हो सकती है आय का साधनः प्रो. केपी सिंह

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि वर्षा ऋतु आरंभ होने को है और इस मौसम में भिण्डी की खेती किसानों के लिए आय का साधन हो सकती है। किसान भाई उपयुक्त वैज्ञानिक जानकारी का प्रयोग करते हुए अपने खेत से अधिक स्वतन्त्रता के फायदान पर अपना पहला कदम बढ़ा सकते है। डॉ. सुरेन्द्र धनखड़, भिण्डी के विशेषज्ञ व डायरेक्टर फार्म के निदेशक हैं, ने बताया कि हरी सब्जियों में भिण्डी का प्रमुख स्थान है व भारत भिण्डी उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। भिण्डी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेटस, कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नेशियम के अतिरिक्त विटामिन ए, बी, सी तथा रेशा पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इसमे आयोडीन की मात्रा अधिक होती है। उन्होंने बताया कि यह फसल गर्मी व बरसात दोनों मौसम में बोई जा सकती है परन्तु यह बरसात के मौसम की मुख्य फसल है व इस मौसम में पैदावार अधिक होती है।

जलवायु व मिट्टी : इसकी पैदावार के लिए लम्बे समय का गर्म व नम वातावरण अच्छा माना जाता है तथा बीज के उगने के लिए 25 से 35 डिग्री सैल्सियस तापमान उपयुक्त होता है। 20 डिग्री सैल्सियस से कम तापमान पर बीजों का अंकुरण नहीं होता व 42 डिग्री सैल्सियस से अधिक तापमान पर इसके फूल झड़ने लगते है। इसके लिए चिकनी से बलुई मिट्टी जिसमें जीवांश की मात्रा अधिक हो व जल निकास उत्तम हो, अच्छी रहती है। अच्छी उपज के लिए हल्की अम्लीय दुमट मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है। खेत को 3-4 गहरी जुताई करके मिट्टी को नरम व भुर-भुरा कर लेना चाहिए। बिजाई से 3 सप्ताह पहले गोबर की खाद खेत में जुताई करते समय डालें। बरसात कालीन फसल के लिए खेत को समान क्यारियों में बांट देना चाहिए।

भिण्डी की उन्नत किस्में : भिण्डी की उन्नत किस्में जैसे वर्षा उपहार, हिसार उन्नत, हिसार नवीन, एच.बी.एच. 142 आदि का बीज ही बोएं। वर्षा उपहार पीलिया रोग रोधी किस्म है जो बरसात के मौसम के लिए उपयुक्त है। यह 45 दिन में फल देना आंरभ कर देती है और इसकी औसत पैदावार 35-40 क्विंटल प्रति एकड़ है।

हिसार उन्नत भी पीलिया रोग रोधी किस्म है जो गर्मी के मौसम के लिए उपयुक्त है। यह 47 दिन में फल देना आंरभ कर देती है और इसकी औसत पैदावार 30-40 क्विंटल प्रति एकड़ है।

हिसार नवीन पीलिया रोग रोधी किस्म है जो वर्षा व गर्मी के मौसम के लिए उपयुक्त है। यह 46-47 दिन में फल देना आंरभ कर देती है और इसकी औसत पैदावार 40-45 क्विंटल प्रति एकड़ है।

एच.बी.एच. 142 भी पीलिया रोग रोधी किस्म है जो वर्षा मौसम के लिए उपयुक्त है, जिसे गर्मी के मौसम में भी उगाया जा सकता है। यह 47-48 दिन में फल देना आंरभ कर देती है और इसकी औसत पैदावार 58 क्विंटल प्रति एकड़ है।

बिजाई का समय व बीज की मात्रा : उत्तरी भारत में साल में दो बार भिण्डी की बिजाई होती है पहली फरवरी से मार्च में जिसें ग्रीष्मकालीन फसल कहते है तथा दूसरी जून से जुलाई में जिसे वर्षाकालीन फसल कहते हैं। ग्रीष्मकालीन मौसम के लिए 16 से 18 किलोग्राम प्रति एकड़ व बरसात के 5-6 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज डालें।

बिजाई की विधि : ग्रीष्मकालीन फसल के लिए खेत में 30 से.मी. चौड़ी डोलियां बनाएं तथा डोलियों के दोनों तरफ किनारों पर 10 से.मी. की दूरी पर बिजाई करें। इससे पानी की बचत होती है। बरसात की फसल के लिए कतार से कतार की दूरी 45 से 60 से.मी. तथा पौधे से पौधे का फासला 30 से.मी. रखें। बिजाई से पहले बीज को रातभर पानी में भिगो दें और अगले दिन एक घंटा छाया में सुखा कर बिजाई करें।

खाद व उर्वरक: गोबर की पूर्ण-सड़ी खाद 10 टन प्रति एकड़ बिजाई से 3 सप्ताह पहले डालें और समान रूप से भूमि में मिला दें। औसत उपजाऊ जमीन में 40 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 24 किलोग्राम फास्फोरस (शुद्ध) प्रति एकड़ डालें। मिट्टी की जांच के बाद ही पोटाश डालें। एक तिहाई नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बिजाई से पहले मिट्टी में मिला दें। नाइट्रोजन की शेष मात्रा दो भागों में एक बिजाई से लगभग तीन सप्ताह बाद व दूसरी मात्रा पौधों में फूल आने के समय डालें।

सिंचाई व निराई गोड़ाई : बिजाई फावेा देकर करें। डोलियों की बिजाई पर खेत में नमी की कमी होने पर बिजाई के तुरन्त बाद सिंचाई दें और दूसरी व तीसरी सिंचाई 3-4 दिन के अंतर पर करें। ग्रीष्मकालीन मौसम में 5-6 दिन के अंतर पर व वर्षाकालीन फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। 2-3 बार निराई गोड़ाई करें।

भिण्डी की तुड़ाई : भिण्डी के फलों को नर्म अवस्था में रेशा बनने से पहले प्रातः या सांयकाल में तोड़ना चाहिए। ग्रीष्मकालीन फसल में 30 क्विंटल व वर्षाकालीन फसल में 40-45 क्विंटल प्रति एकड़ भिण्डी के मूल्यवम फलों की पैदावार प्राप्त हो जाती है। उपरोक्त वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं को कार्यान्वित करने पर किसान भाई भिण्डी की अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार–पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जीवन आधार)	09.06.2020	---	---

भिण्डी की वैज्ञानिक खेती करके बनाएं आय का साधन : केपी सिंह

SHARE 0

हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा है कि वर्षा ऋतु आरंभ होने को है और इस मौसम में भिण्डी की खेती किसानों के लिए आय का साधन हो सकती है। किसान उपयुक्त वैज्ञानिक जानकारी का प्रयोग करते हुए अपने खेत से आर्थिक स्वतन्त्रता के पायदान पर अपना पहला कदम बढा सकते हैं।

भिण्डी के विशेषज्ञ व डायरेक्टर फार्म के निदेशक डॉ. सुरेन्द्र धनखड़ ने बताया कि हरी सब्जियों में भिण्डी का प्रमुख स्थान है व भारत भिण्डी उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। भिण्डी मे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेटस, कैल्शियम, फास्फोरस, मैग्नेशियम के अतिरिक्त विटामिन ए, बी, सी तथा रेशा पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इसमे आयोडीन की मात्रा अधिक होती है। उन्होनें बताया कि यह फसल गर्मी व बरसात दोनों मौसम में बोई जा सकती है परन्तु यह बरसात के मौसम की मुख्य फसल है व इस मौसम में पैदावार अधिक होती है।

जलवायु व मिट्टी : इसकी पैदावार के लिए लम्बे समय का गर्म व नरम वातावरण अच्छा माना जाता है तथा बीज के उगने के लिए 25 से 35 डिग्री सैल्सियस तापमान उपयुक्त होता है। 20 डिग्री सैल्सियस से कम तापमान पर बीजों का अंकुरण नहीं होता व 42 डिग्री सैल्सियस से अधिक तापमान पर इसके फूल झडने लगते हैं। इसके लिए चिकनी से बलुई मिट्टी जिसमें जीवांश की मात्रा अधिक हो व जल निकास उत्तम हो, अच्छी रहती है। अच्छी उपज के लिए हल्की अम्लीय दुमट मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है। खेत को 3-4 गहरी जुताई करके मिट्टी को नरम व भुर-भुरा कर लेना चाहिए। बिजाई से 3 सप्ताह पहले गोबर की खाद खेत में जुताई करते समय डालें। बरसात कालीन फसल के लिए खेत को समान क्यारियों में बांट देना चाहिए।

भिण्डी की उन्नत किस्में : भिण्डी की उन्नत किस्मों जैसे वर्षा उपहार, हिसार उन्नत, हिसार नवीन, एच.बी.एच. 142 आदि का बीज ही बोएं। वर्षा उपहार पीलिया रोग रोधी किस्म है जो बरसात के मौसम के लिए उपयुक्त है। यह 45 दिन में फल देना आंरभ कर देती है और इसकी औसत पैदावार 35-40 क्विंटल प्रति एकड़ हैं।

हिसार उन्नत भी पीलिया रोग रोधी किस्म है जो गर्मी के मौसम के लिए उपयुक्त है। यह 47 दिन में फल देना आंरभ कर देती है और इसकी औसत पैदावार 30-40 क्विंटल प्रति एकड़ हैं।

हिसार नवीन पीलिया रोग रोधी किस्म है जो वर्षा व गर्मी के मौसम के लिए उपयुक्त है। यह 46-47 दिन में फल देना आंरभ कर देती है और इसकी औसत पैदावार 40-45 क्विंटल प्रति एकड़ हैं।

एच.बी.एच. 142 भी पीलिया रोग रोधी किस्म है जो वर्षा मौसम के लिए उपयुक्त है, जिसे गर्मी के मौसम में भी उगाया जा सकता है। यह 47-48 दिन में फल देना आंरभ कर देती है और इसकी औसत पैदावार 58 क्विंटल प्रति एकड़ हैं।

बिजाई का समय व बीज की मात्रा : उत्तरी भारत में साल में दो बार भिण्डी की बिजाई होती है पहली फरवरी से मार्च में जिसे ग्रीष्मकालीन फसल कहते हैं तथा दूसरी जून से जुलाई में जिसे वर्षाकालीन फसल कहते हैं। ग्रीष्मकालीन मौसम के लिए 16 से 18 किलोग्राम प्रति एकड़ व बरसात के 5-6 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज डालें।

बिजाई की विधि : ग्रीष्मकालीन फसल के लिए खेत में 30 सैं.मी. चौड़ी डोलियां बनाएं तथा डोलियों के दोनों तरफ किनारों पर 10 सैं.मी. की दूरी पर बिजाई करें। इससे पानी की बचत होती है। बरसात की फसल के लिए कतार से कतार की दूरी 45 से 60 सैं.मी. तथा पौधे से पौधे का फासला 30 सैं.मी. रखें। बिजाई से पहले बीज को रातभर पानी में भिंगो दें और अगले दिन एक घंटा छाया में सुखा कर बिजाई करें।

खाद व उर्वरक : गोबर की गली-सड़ी खाद 10 टन प्रति एकड़ बिजाई से 3 सप्ताह पहले डालें और समान रूप से भूमि में मिला दें। औसत उपजाऊ जमीन में 40 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 24 किलोग्राम फास्फोरस (शुद्ध) प्रति एकड़ डालें। मिट्टी की जांच के बाद ही पोटाश डालें। एक तिहाई नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बिजाई से पहले मिट्टी में मिला दें। नाइट्रोजन की शेष मात्रा दो भागों में एक बिजाई से लगभग तीन सप्ताह बाद व दूसरी मात्रा पौधों में फूल आने के समय डालें।

सिंचाई व निराई गोडाई : बिजाई पलेवा देकर करें। डोलियों की बिजाई पर खेत में नमी की कमी होने पर बिजाई के तुरन्त बाद सिंचाई दें और दूसरी व तीसरी सिंचाई 3-4 दिन के अंतर पर करें। ग्रीष्मकालीन मौसम में 5-6 दिन के अंतर पर व वर्षाकालीन फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। 2-3 बार निराई गोडाई करें।

भिण्डी की तुड़ाई : भिण्डी के फलों को नर्म अवस्था में रेशा बनने से पहले प्रात: या सांयकाल में तोडना चाहिए। ग्रीष्मकालीन फसल में 30 क्विंटल व वर्षाकालीन फसल में 40-45 क्विंटल प्रति एकड़ भिण्डी के मुलायम फलों की पैदावार प्राप्त हो जाती है। उपरोक्त वैज्ञानिक सस्य क्रियाओं को कार्यान्वित करने पर किसान भाई भिण्डी की अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।